❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

मार्गशीर्ष-पौषमासः, विक्रम संवत् - २०७३

वर्ष : ८ | अंक : १०२ | दिसम्बर : २०१६ | मूल्य : ५.०० रुपये

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

संरक्षक - संस्थापक

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

❖

परामर्शदाता

डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार

❖

मुख्य सम्पादक

डॉ. धनञ्जय आर्य (अवैतनिक)

❖

सम्पादक

चन्द्रभूषण आर्य

डॉ. रवीन्द्र आर्य

❖

कार्यकारी सम्पादक

ब्र. शिवदेव आर्य

❖

व्यवस्थापक

ब्र. अनुदीप आर्य

ब्र. कैलाश आर्य

❖

कार्यालय

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल

दून वाटिका-२, पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड)

जंगमवाणी -९४११९०६१०४,८८१०००५०९६

ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in

website: www.pranawanand.org

सदस्यता शुल्क

आजीवन - १०००.०० रुपये

वार्षिक - ५०.०० रुपये/ एक प्रति - ५ रुपये

विषय-क्रमणिका

विषयः	पृष्ठः
सम्पादकीय	२
श्रद्धामयोऽयं पुरुषः स्वामी श्रद्धानन्द	४
आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या	६
क्या मनुष्य का कोई बुरा कर्म..	९
महान् कौन - अकबर या प्रताप...?	१०
कृषिविवेचना	१६
ज्वालयतु रे! दीपपंक्तिम्	१८
सामान्यज्ञान-दर्पणम्	१९
संस्कृत-शिक्षणम्	२०

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती को शत-शत नमन..

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

सम्पादक की कलम से...

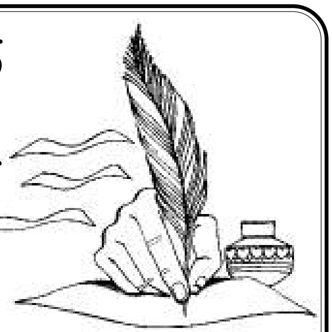

एक निर्णय, जो बदल देगा भारत की तस्वीर...

निर्णय किसी भी कार्य को नवीन दिशा व दशा देने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। हमारे देश में नयी सरकार के आने के बाद नित नये–नये निर्णयों से देश अपनी उन्नति की ओर अग्रसरित हो रहा है। पहले जनधन खाता योजना का निर्णय फिर ट्रांजेक्शन पर पेन नम्बर की अनिवार्यता और अब सम्पूर्ण देश में ५००–१००० के नोटों को प्रतिबन्ध करने का निर्णय निरन्तर लिया जा रहा है। ऐसे निर्णयों को लेने से सम्पूर्ण देश में हल–चल होना स्वभाविक ही है लेकिन इससे अच्छी बात और कुछ नहीं हो सकती कि सबसे ज्यादा हल–चल भ्रष्टतत्वों के बीच में पैदा हो रही है।

नोट बन्द करना एक ऐसा फैसला है, जो भ्रष्टतत्वों की कमर तोड़ने में सहायक साबित हो रहा है। आगे भी अन्य ऐसे कदम उठाए जाये, जिससे काले धन की अर्थव्यवस्था पर प्रभावी और दीर्घकालिक ढ़ंग से लगाम लगे।

हमारी अर्थव्यवस्था काले धन और नकली नोटों के कारण दबती चली जा रही थी, इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता। इससे लगभग सभी लोग सुपरिचित हैं कि देश में किस तरह से व्यापक रूप में काला धन निर्मित हो रहा है।

काला धन दो रूपों में है। एक तो काला धन टैक्स चोरी कर अर्जित किया जाता है और दूसरा अवैध तरीकों से एकत्रित की गई सम्पत्ति। अवैध तौर–तरीकों में लिप्तता और आतंकी तत्वों से मेल–जोल आदि से। यह सत्य है कि अवैध कृत्यों के जरिये बड़े पैमाने पर काला धन जुटाने वाले तत्वों के होश उड़ गए होगें। ऐसे तत्वों के प्रति कहीं कोई सहानुभूति नहीं हो सकती। और भी अच्छा होगा कि ऐसे ठोस कदम सरकार की ओर से उठाये जाये, जिससे काले धन का कारोबार नये सिरे से न फले व फूले।

काले धन के विरुद्ध सरकार ने लोगों से अधिक से अधिक नकद विहीन लेन–देन को अपनाने का आह्वान किया है। यह सही है कि काले धन की समानान्तर अर्थव्यवस्था समाप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम नकदी की कम से कम प्रयोग करें लेकिन भारत जैसा देश इसमें कहाँ तक सफल होता है, यह तो देखना पड़ेगा।

नि:संदेह सरकार की यह सोच सही थी कि नोट बंदी की घोषणा पूर्णतया गोपनीय ढ़ग से की जाये। यदि इसमें समय दिया जाता तो शायद बन्द करने से कोई भी लाभ होने वाला नहीं था। क्योंकि लोग काले धन को सफेद धन बनाने में सक्षम हो जाते।

वर्तमान में कुछ लोगों का कहना है कि मोदी जी को यह कदम अपने दूसरे कार्यकाल में उठाना चाहिए था, क्योंकि नोटबन्दी के फैसले से भाजपा के मतदाता चुनावों में उसके लिए समस्या पैदा कर सकते हैं। ८ नवम्बर की रात को इस नोटबन्दी की घोषणा के बाद १.५ लाख फॉलोअर्स. ने मोदी को अनफॉलो

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

कर दिया लेकिन हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि **'न्याय्यात् पथ प्रविचलन्ति पदं न धीरा:'** जो राजनीति में रहकर राष्ट्रहितनीति करते हैं, उनको कोई फर्क नहीं पड़ता। रही बात चुनावी समस्या की तो इसका परिणाम चुनाव स्वयं ही देंगे।

सरकार के इस एक कदम ने तीन क्षेत्रों को हिलाकर रख दिया है, वो तीन क्षेत्र हैं - भ्रष्टाचार, नकली नोटों का चलन, आतंकवाद।

सरकार के इस कदम के पीछे एक ही मुख्य उद्देश्य छिपा हुआ है कि भारत में एक ऐसा माहौल तैयार करना है जो एक पूर्णपरिश्रमपरक ईमानदार आदमी को भ्रष्टाचारी बनने के लिए मजबूर न करें। वैसे यह इस सर्जिकल ऑपरेशन की सफलता का प्रमाण है कि कश्मीर में आतंकियों और देश के विभिन्न राज्यों में फैले माओवादी नक्सली समूह जिन्होंने अवैध तरीको और हवाला के माध्यम से मोटी रकम जमा कर रखी थी, लेकिन नोटबंदी के बाद से स्वयं को विवश पा रहे हैं।

सरकार को यह सर्वथा ज्ञात है कि हमारी चुनावी व्यवस्था कालेधन की सबसे बड़ी पोषक व पालक है। टिकटों के लेन-देन में ही करोड़ों का कालाधन इधर से उधर हो जाता है। चुनावी खर्च की सीमा मजाक के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इस बात को राजनेता स्वीकार करें या न करें किन्तु यह सत्य ही है कि मतदान के दिन का खर्च ही अधिकतम सीमा से अधिक होता है। इनकी भी दुकानदारी बन्द हो रही है। इसलिए सारी की सारी पार्टी अग्नि का कुण्ड बनती चली जा रही हैं।

सम्पूर्ण जनमानस सरकार के सकारात्मक प्रयास से बहुत खुश हैं। मीडिया व विभिन्न राजनैतिक पार्टियाँ इस फैसले से नाराज है और नाराज होना स्वभाविक भी है, क्योंकि इन लोगों की अब दाल गलने वाली नहीं है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस निर्णय का अधिकांश लोगों ने स्वागत किया है। जो लोग आम आदमी की परेशानी का हवाला देकर इस फैसले पर सवाल उठा रहे हैं, वे कहीं न कहीं अपने काले धन से व्याकुल है। राहुल गाँधी कह रहे हैं कि उन्होंने बैंकों तथा ए.टी.एम. में सिर्फ गरीबों को लाइन में देखा है। हो सकता है कि उन्होंने देश भर में अपनी प्रयोजित यात्राओं में ऐसे दृश्यों को नहीं देखा होगा, उनको अपनी रैलीयों में भी गरीब लोगों की लाईन न दिखती होगी। खैर इन महाशयों की बातों में तथ्य व प्रमाण तो होता ही नहीं और स्वयम्भू माननीय केजरीवाल जैसे विरोधी लोगों को लोग स्वयं ही धक्का देकर समझा देते हैं। ऐसे नेता लोग भूल जाते हैं कि आज भी लोग हर रोज लाईनों में ही गये होते है, जैसे - राशन की लाईन में तो कभी सिलिंडर में, टिकिट की लाईन में तो कभी पानी की लाईन में, कभी सिनेमाघरों की लाईन में तो कभी जिओ की लाई में... और यहाँ तक अपने नेता बनाने वाली लाईन को तो भूल ही जाते हैं, क्या कभी चुनावी वोटरों की लाईन का विरोध करते हैं? ये लाईन किसी एक व्यक्ति के घर के राशन, पानी, बिजली की नहीं है अपितु देश को बदलने की लाईन है। आज तक नेता अपने स्वार्थीपन में डूबे हुए हैं ही किन्तु आज जब कोई देश के हित के लिए सोच रहा है तो ऐसे में राजनीति करने चले। शर्म आनी चाहिए ऐसे तन-मन-धनभ्रष्टनेताओं को। हम इस निर्णय का पूर्णरूपेण समर्थन करते हैं और आप सभी पाठकों से निवेदन करते हैं कि ऐसे निर्णय का पूर्णरूपेण समर्थन करो। इस निर्णय में आपको एक नये भारतवर्ष को देखने की आवश्यकता है। आप सभी प्रबुद्ध हैं, निर्णय आपके हाथों में है, क्या करना है...जरा सोचकर करना...

शिवदेव आर्य.....
shivdevaryagurukul@gmail.com
Mob.-८८१०००५०९६

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

श्रद्धामयोऽयं पुरुषः स्वामी श्रद्धानन्द

❑ डॉ. रघुवीर वेदालंकार...✍

स्वामी श्रद्धानन्द वीर संन्यासी थे, सर्वस्व त्यागी थे, कांग्रेस तथा आर्यसमाज के नेता थे। इनके साथ वे श्रद्धासंयुक्त परम ईश्वरभक्त थे। जहाँ उनका विश्वास नहीं था या बाद में नहीं रहा, उन कार्यों को केवल दिखावे के आधार ही उन्होने कभी स्वीकार नहीं किया। मुंशीराम जी के पिता जी मूर्तिपूजक थे तथा वे मुंशीराम को भी ऐसा ही बनाना चाहते थे, किन्तु वहाँ श्रद्धा न होने से मुंशीराम ने ऐसा करना स्वीकार नहीं किया। आज तो आर्यसमाज में अनेक व्यक्ति उभयनिष्ठ हैं जो आर्यसमाज में भी जाते हैं, वहाँ अधिकारी भी बनते हैं तथा उनके घरों में मूर्तियाँ भी हैं। आर्यसमाज के शैथिल्य का यह बहुत बड़ा कारण है।

स्वामी जी अपने दुर्व्यसनों को छोड़कर ऋषिभक्त बन गये तो केवल दिखावा करने के लिए नहीं, अपितु दयानन्द के प्रति पूर्ण सश्रद्ध होकर उन्होंने अपना जीवन तथा साथ ही सम्पत्ति भी आर्य समाज को अर्पित कर दी, यह उनकी श्रद्धा का ही परिणाम था।

वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है, किन्तु इस परम धर्म का पालन कितने व्यक्ति करते हैं? जो भी करते हैं, उनमें से कितने व्यक्ति सश्रद्ध उन्हें पढ़ते-सुनते हैं, यह नहीं कहा जा सकता। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस परमधर्म का पालन पूर्ण श्रद्धा के साथ करना प्रारम्भ किया। इसी का परिणाम था कि 'उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धिया विप्रो अजायत' यह मन्त्र पढ़ते ही उनके मस्तिष्क में बिजली कौंध गयी। मन में एक सुविचार जगा कि वेद के इस मन्त्र को कार्यरूप में परिणत करके देखा जाए।

इसी आधार पर उन्होंने हरिद्वार में पुण्य सलिला भागीरथी के किनारे हिमगिरि की पावन उपत्यका में गुरुकुल खोलने का निश्चय किया। लोग हँस रहे थे, आश्चर्य कर रहे थे कि ऐसे निर्जन जंगल में गुरुकुल? किन्तु स्वामी जी तो '**श्रद्धामयोऽयं पुरुषः**' थे। श्रद्धापूर्वक संकल्प कर लिया तो उस पर न केवल अडिग ही रहे, अपितु उसे पूर्ण करके भी दिखला दिया।

वेद में प्रातः सांय तथा मध्याह्न में भी श्रद्धा का आह्वान किया गया है। योगदर्शन के भाष्य में व्यास जी कहते हैं कि श्रद्धानन्द भी योगी थे। श्रद्धा योगी की जननी की तरह ही रक्षा करती है तथा वह कल्याण करने वाली है। वे कर्मयोगी थे। '**सुखदुःखे समे कृत्वा**' उन्होंने इस योग को प्राप्त किया था। निष्कामता कर्मयोग का प्राण है। स्वामी जी ने इसी निष्कामता को धारण किया हुआ था। कार्यक्षेत्र में रहते हुए उनका अपमान भी किया गया, आरोप भी लगाए गये, क्योंकि कुछ लोगों का धर्म ही यह है कि वे समाजसेवी, निष्काम व्यक्तियों पर कीचड़ उछालें। यह बात अलग है कि दूसरों पर फेंकने से पहले उठाने वाला अपने हाथ तो गन्दे कर ही लेता है। स्वामी श्रद्धानन्द सब कुछ सहन करके समत्व भाव से कार्य करते रहे। यह इसीलिए कि यहाँ भी एक योगी की भाँति उनकी रक्षा श्रद्धामाता ही कर रही थी।

श्रद्धा तथा सत्य प्रायः साथ-साथ चलते हैं। जहाँ सत्य नहीं होता, वह अन्धश्रद्धा कहलाती है। इसी अन्धश्रद्धा में अनेक भारतीय चक्कर लगा रहे हैं। स्वामी श्रद्धानन्द में सत्य के प्रति श्रद्धा थी। वे सत्य के प्रति निष्ठावान् थे। उन्होंने जहाँ भी सत्य देखा, श्रद्धा पूर्वक उसे स्वीकार किया तथा जीवन में धारण किया। अपने बीभत्स जीवन को छोड़कर उन्होंने जिस सच्चे संन्यासी के स्वरूप को धारण किया, उसके पीछे उनकी श्रद्धा ही थी। आर्यसमाज के कार्य को अपना तन-मन-सर्वस्व देकर बढ़ाया, इसके पीछे उनकी श्रद्धा ही थी। अपने नास्तिक जीवन का त्याग कर वे परम ईश्वरभक्त बने, इसके पीछे उनकी श्रद्धा ही थी। कर्तव्य पर आगे बढ़ते

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

हुए अंग्रेजी संगीनों का भय भी उन्हें पीछे नहीं हटा सका, इसके पीछे उनकी श्रद्धा ही थी। स्वामी जी परम श्रद्धालु तथा परम ईश्वर भक्त थे। ईश्वर भक्ति से उन्होंने इस श्रद्धा को प्राप्त किया था या अपनी अटूट श्रद्धा के बल पर ईश्वर भक्ति को प्राप्त किया था, यह समझ में नहीं आता, तथापि इतना तो सुस्पष्ट है कि इसी श्रद्धा तथा ईश्वर भक्ति के आगे उन्होंने अपने आपको पूर्णतः समर्पित कर दिया था। इसीलिए वे मृत्यु भय, जिसे पतञ्जलि ने अभिनिवेश नामक क्लेश माना है से सर्वथा मुक्त थे। ऐसे वीर संन्यासी का मृत्यु क्या बिगाड़ती। अपनी इसी अटूट श्रद्धा के कारण मुंशीराम जी ने अपना नाम भी श्रद्धानन्द ही रखा तथा अपनी आत्मकथा **'कल्याणमार्ग का पथिक'** में **'श्रद्धामयोऽयं पुरुषः'** का सश्रद्धा उल्लेख किया। उसी श्रद्धा की साक्षात् मूर्ति वीर संन्यासी परम ईश्वर भक्त स्वामी श्रद्धानन्द को उनके बलिदान दिवस पर सश्रद्धा प्रणाम।

बी-२६६ सरस्वती विहार, दिल्ली

गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली में चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आरम्भ

संवाददाता - अंकुश

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय ११९ गौतम नगर, नई दिल्ली-४९ का चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव का शुभारम्भ २७ नवम्बर २०१६ को हुआ। इस आयोजन का प्रारम्भ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने ऋग्वेद की ऋचाओं के यज्ञ का प्रारम्भ कर किया। यज्ञ के ब्रह्मा वेद के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. महावीर जी हैं। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. महावीर जी ने चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का महत्त्व बताते हुए कहा कि - संसार में यदि कोई समस्याओं का समाधान दिखा सकता है तो वो है वेदों का ज्ञान। वेदों का ज्ञान सर्वकालिक है, यह सबसे बड़ी विशेषता है वेदों की। प्रत्येक घर में प्रतिदिन यज्ञ के साथ कम से कम एक वेद मन्त्र की व्याख्या सहित पढ़कर व्यवहार रूप में धारण किया जाये। इस कार्यक्रम में पं. ओमप्रकाश वर्मा जी (भजनोपदेशक), डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जी (पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी) तथा आनन्द कुमार (आई.पी.एस.), आदि ने भी अपने विचार रखे। यज्ञ के पश्चात् ध्वजारोहण का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि दिल्ली प्रदेश के भाजपा उपाध्यक्ष सतीश उपाध्याय जी ने ध्वजारोहण किया तदनन्तर सतीश उपाध्याय ने अपने उद्बोधन में एकता का संदेश देते हुए कहा कि शिक्षा ही सभी को एक सूत्र में पिरो सकती है, शिक्षा जहाँ ज्ञानवर्धन का साधन है वहीं वह लोकोपयोगी भी है और शिक्षा के सर्वश्रेष्ठ केन्द्र गुरुकुल ही हैं। इस उद्बोधन के पश्चात् संस्था संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने उपस्थित जनमानस का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि ये आयोजन आप सबका है, आप सबके सहयोग के बिना यह आयोजन कभी भी अपनी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता, आप सभी इस आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर गुरुकुल व आर्ष परम्परा का सहयोग करें। इसप्रकार ध्वजारोहण के कार्यक्रम का समापन हुआ। सांयकालीन सत्र में ३ बजे से यज्ञ का प्रारम्भ हुआ, जिसमें यज्ञ के ब्रह्म डॉ. महावीर जी ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया। साथ में ओडिशा से आये डॉ. वेदव्रत आलोक जी ने भी अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि यज्ञ केवल बाह्य पर्यावरण को शुद्ध नहीं करता अपितु मानसिक पर्यावरण को शुद्ध करता है। जब हमारा मानसिक पर्यावरण शुद्ध एवं संतुलित होगा तभी जाकर हम बाह्य पर्यावरण को शुद्ध करने में सक्षम हो सकेंगे। श्री अशोक आर्य भजनोपदेश ने भी एक भजन के माध्यम से वेद की महिमा का यशोगान किया।

प्रतिदिन यज्ञ का कार्यक्रम प्रातःकाल ७ बजे से आरम्भ होकर ९:३० बजे तक तथा सायंकालीन सत्र में ३ बजे से ६:३० बजे तक आयोजित होगा। इस कार्यक्रम की पूर्णाहुति १८ दिसम्बर को होगी। आप सभी इस कार्यक्रम में अपने इष्ट मित्रों सहित उपस्थित हो धर्मचर्चा के भागी बनें।

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

आर्य समाज के नियमों की व्याख्या

(स्वामी देवव्रत सरस्वती के कतिपय प्रवचनों का संग्रह)

❑ **संकलनकर्ता-आचार्य डॉ. धनञ्जय......**

क्रमशः....

तृतीय नियम

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

वेद की अन्य ग्रन्थों से तुलना इसलिये नहीं की जा स कती क्योंकि वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में ईश्वर ने चार ऋषियों को दिया। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है यह दूसरे नियम में कहा जा चुका है।

परा और अपरा विद्या के दो भेद हैं। अपराविद्या में कार्यजगत् का ज्ञान प्राप्त कर उससे जीवन सुखी बनाना अपराविद्या कहलाती है। जैसे आजकल के भौतिक विज्ञान ने मानव जीवन को सुखी बनाने के लिये बहुत सुविधाओं का विकास और अनेक समस्याओं का समाधान कर दिया है। इसी भांति ऋग्वेद में ज्ञान, यजुर्वेद में कर्म, सामवेद में उपासना और अथर्ववेद में विज्ञान की प्रधानता है। मानव जीवन को निर्बाध रूप में चलाने के लिये जितने ज्ञान की आवश्यकता थी उतना ज्ञान वेदों में विद्यमान है। पराविद्या - जिससे आत्मा-परमात्मा की प्राप्ति हो उसे परा विद्या कहते हैं। मनुष्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति ही है और वह ईश्वर का साक्षात्कार होने पर ही सम्भव है।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।

आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक तीन अर्थ प्रकरण के अनुसा मन्त्रों के किये जाते हैं परन्तु कहीं पर गौण और कहीं मुख्य रूप में सभी मन्त्रों में ईश्वर का ही वर्णन है। प्राकृतिक पदार्थों में जो गुण भरे हैं वे सब ईश्वर की महिमा को ही दर्शाते है।

ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में महर्षि दयानन्द जी ने अनेक विद्याओं का वर्णन वेदों के प्रमाण देकर किया है।

वेद सृष्टि का आदि संविधान है। अन्य ग्रन्थ परतः प्रमाण है क्योंकि वे ऋषि-मुनियों ने बनाये हैं।

वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म इसलिये कहा कि इनके अध्ययन या श्रुत ज्ञान से कर्तव्यों का ज्ञान प्राप्त होता है। व्यक्ति का अपने प्रति क्या कर्तव्य है, परिवार, समाज, राष्ट्र और मानवमात्र के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिये, इसका सही ज्ञान वेद द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। चार वर्ण, चार आश्रम, राजा-प्रजा, गृहस्थ आश्रम के व्यवहार, पति-पत्नी, पिता-पुत्र का सम्बन्ध और राजा-प्रजा के कर्तव्यों का विस्तार से वर्णन वेदों में किया गया है।

वेदों के उपदेश किसी देश, जाति या धर्म विशेष के लिये न होकर मानव मात्र के लिये उपयोगी हैं।

कर्तव्य पालन का नाम धर्म है जिसका मूल वेद है। मनुस्मृति कहती है-**वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**। सत्यासत्य का निर्णय वेद के बिना नही हो सकता। आर्य जनों का यह कर्तव्य बनता है कि वे महर्षि के आदेशानुसार प्रतिदिन वेदों का स्वाध्याय करें। जो वेदों के अर्थो को समझ नहीं सकते उन्हें सरल भाषा में समझाया जाये और एक-एक विषय पर वेद मन्त्रों का संग्रह कर जनता की भाषा में उनका अनुवाद करा कर वेद प्रचार को आगे बढ़ाना चाहिये।

वेद पढ़ने का मनुष्य मात्र को अधिकार है-

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।

-यजु. २६/२

चतुर्थ नियम

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

देवता सदा सत्य का व्यवहार करते हैं और साधारण मनुष्यों का व्यवहार सत्य और असत्य का मिला हुआ होता है- **सत्यं वै देवा अनृतं मनुष्याः** (शत०) महर्षि दयानन्द जी को सत्य से बहुत प्रेम था। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश इसीलिये रखा कि जिससे लोग सत्य और असत्य को जान सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग कर सकें।

जैसा देखा, जैसा सुना, जैसा अपने मन में हो, उसे वैसा ही कहना, करना और मानना सत्य कहलाता है, परन्तु वह सत्य मधुर और परोपकारक होना चाहिये। सत्य की पहचान-वेदों में सत्य की दो कसौटियां दी हैं -

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।

अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

-यजु. १९/७७

परमात्मा ने सत्य व्यवहार में श्रद्धा का भाव और असत्य में भय, शंका, लज्जा, ग्लानि को दिया है।

सुविज्ञानं चिकितुषेजनाय सच्चासच्च बचसी पस्पृधाते।

तयोर्यत् सत्यं यतरदृजीस्तदित सोमोऽवति हन्त्यासत्।।

-अथर्व. ८/४/१२

कौन-सा सत्य है और असत्य कौन-सा है, इसका जानना बहुत सरल है। जो सरल है, जिसमें कहीं छल-कपट का व्यवहार नहीं हो वह सत्य है। परमात्मा सत्य और सत्यवादी की रक्षा करता है और असत्य का आचरण करने वाले का नाश।

इन दोनों मन्त्रों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सत्य सदा सरल होता है और उसमें श्रद्धा का भाव रहता है।

सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में कहा है - मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड असत्य में झुक जाता है। सत्यासत्य दोषों की परीक्षा पांच प्रकार से होती है-

१. जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों के अनुकूल वह-वह सत्य और उससे विरूद्ध असत्य है।

२. जो सृष्टिक्रम के अनुकूल वह सत्य और जो सृष्टि क्रम के विरूद्ध हो वह असत्य है। जैसे बिना माता-पिता के योग के सन्तान का होना।

३. आप्त अर्थात् धार्मिक विद्वान्, सत्यवादी, निष्कपटी, जैन का उपदेश ग्राह्य और इसके विपरीत अग्राह्य है।

४. अपनी आत्मा की पवित्रता, विद्या के अनुकूल अर्थात् जैसा अपने को सुख प्रिय और दु:ख अप्रिय है वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को सुख दूंगा तो वह प्रसन्न और दु:ख देने पर अप्रसन्न होगा।

५. प्रत्यक्षादि आठों प्रमाण इसे जो परीक्षित है वह सत्य और शेष असत्य है। (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्। प्रिय सत्य बोलना चाहिये। सत्याचरण-

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। -यजु. १/५

हे व्रतों के रक्षक परमेश्वर! मैं व्रत करना चाहता हूँ। उसको मैं पूरा कर सकूं इस कार्य में मेरी सहायता कीजिये। मैं असत्य को छोड़ सत्य को प्राप्त होता हूँ।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।

चतुर्थ नियम में सत्य का ग्रहण और असत्य को छोड़ने के लिये कहा। अब पांचवे नियम में कौन से कार्य करते समय कैसे किया जाये इसे बतलाया है।

शास्त्रकारों ने सत्य और धर्म दोनों को पर्यायवाची माना है। सत्य का लक्षण पहले नियम में कर दिया है। धर्म का लक्षण स्वामी दयानन्द जी ने बतलाते हुये कहा है- 'जो पक्षपात रहित, न्याय, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, पांचों परीक्षाओं के अनुकूल आचरण, ईश्वराज्ञापालन, परोपकार करना रूप धर्म और जो इसके विपरीत वह अधर्म कहलाता है।' वैशेषिक दर्शन में धर्म का लक्षण किया है-

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

यतोऽभ्युदयनिः श्रेयसः सिद्धिः स धर्मः।

जिससे इस लोक और परलोक दोनों की प्राप्ति हो वह धर्म है। महाभारत के शान्तिपर्व (११०/१०-कर्ण ६९/५८) में कहा है-

धारणाद् धर्म इत्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।
यत् स्याद् धारण संयुक्तं स धर्म इति निश्चयः।।

जो प्रजा को धारण करे उसे धर्म कहते हैं।

सुखस्य मूलं धर्मः

कर्म सब सुखों का मूल है।

सुखार्थाः सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः।
सुखं च न विना धर्मात् तस्माद् धर्मपरोभवेत्।।

-वागमट सूत्र १९

सभी प्राणियों की सारी क्रियायें सुख प्राप्ति के लिये होती है। धर्म के बिना सुख प्राप्त नहीं होता। इसलिये सब को धर्माचरण करना चाहिये।

महर्षि वेदव्यास जी कहते हैं-

ऊर्ध्व बाहुर्विरोभ्येष न च कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स कुतो न सेव्यते।।

मैं दोनों हाथ ऊपर उठाकर कह रहा हूं कि हे लोगो ! धर्म से अर्थ और काम दोनों की प्राप्ति होती है फिर भी तुम उसका सेवन क्यों नहीं करते?

धर्म का सार-

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चेवाव धार्यताम्
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

जो व्यवहार अपने को अच्छा नहीं लगे उसे दूसरों के साथ न करे यही धर्म का सार है।

धर्म का ज्ञान -

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृति शीले च तद् विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च।। -मनु.२/६

सारा वेद धर्म का मूल है, वेद के अनुसार ऋषि-मुनियों के ग्रन्थ-ब्राह्मण, उपनिषद् दर्शन आदि, सज्जन पुरूषों का आचार और अपने आत्मा की प्रसन्नता (साक्षी) ये चार धर्म ज्ञान के साधन है।

कई बार व्यक्ति धर्म संकट में पड़ जाता है। कौन सा कार्य करना उचित है और कौन सा अनुचित इस विषय में किं कर्तव्यविमूढ़ हो जाने पर सत्य और असत्य को विचार करके ही आगे पग बढ़ाना चाहिये। शास्त्रों का मत क्या है? पुरातन महापुरूषों ने ऐसे अवसर पर क्या उपाय उचित समझा और आपकी आत्मा क्या कहती है इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। सत्य का वचन भी वहीं तक उचित है जिससे किसी का हित होता है, किसी निरपराध प्राणी की हिंसा नहीं होती हो। कई बार सत्य दिखाई देने वाला कार्य भयंकर अनिष्ट परिणाम वाला भी हो जाता है। इसलिये सत्य और धर्म को विचार कर ही कार्य करने चाहिये।

- आचार्य
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी की शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा में गुरुकुल पौन्धा

१०-११ नवम्बर २०१६ को उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी की ओर से राज्यस्तरीय शास्त्रीय प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। इस प्रतिस्पर्धा में विकासनगर खण्ड से विजयी गुरुकुल पौन्धा देहरादून के छात्रों ने राज्यस्तरीय प्रतिस्पर्धा में प्रतिभाग किया। 'स्वच्छताभियानशासनदायित्वम्' इस विषय पर संस्कृत वाद-विवाद प्रतिस्पर्धा के कनिष्ठवर्ग में ब्र. त्रिजकिशोर आर्य तथा ब्र. भानुप्रताप आर्य ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कनिष्ठवर्ग श्लोकोच्चारण में ब्र. देवव्रत आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सभी विजेता छात्रों को आचार्य डॉ. धनञ्जय जी, आचार्य चन्द्रभूषण व आचार्य यज्ञवीर जी आदि ने अपना आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ दी।

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

क्या मनुष्य का कोई बुरा कर्म ईश्वर से छुप सकता व अदण्ड्य हो सकता है?

❑ मनमोहन आर्य...✍

मनुष्य इस संसार में अपने पूर्वजन्म व जन्मों के अवशिष्ट कर्मों के फलों को भोगने और नये कर्म करने के लिए आता है। मनुष्य जीवन भर जो अच्छे व बुरे कर्म करता है, उसका लेखा जोखा कौन रखता है? कैसे कर्मों का फल मिलता है और कैसे हमारी अगले जन्म की योनि निर्धारित होती है? यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन पर प्रत्येक मनुष्य को विचार करना चाहिये और निर्णय करने का प्रयास करना चाहिये। यदि उससे निर्णय न हो तो उसके लिए उसे वैदिक जीवन पद्धति और कर्म फल सिद्धान्त को जानने के लिए दर्शन व मनुस्मृति सहित ऋषियों व उच्चकोटि के आर्य विद्वानों के ग्रन्थों को पढ़ना चाहिये। हमें वर्तमान में जो मनुष्य जीवन मिला है, उसका कारण हमारे पूर्व जन्म के कर्म ही हैं। हमारा रूप, रंग, आकृति, कद, काठी, माता, पिता व सामाजिक वातावरण आदि परमात्मा मुख्यत: हमारे पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर ही तय करता है। परमात्मा के अलावा कोई ऐसी सत्ता है ही नहीं कि जो यह कार्य करे। अत: यह सत्य सिद्धान्त है कि ईश्वर ही हमारे वर्तमान जीवन का कारण है और वही हमारे भविष्य के जीवन व परजन्मों का भी निमित्त कारण होगा।

मनुष्य जो अच्छे बुरे कर्म करता है वह समय के साथ भूलता जाता है। अब ऐसी कौन सी सत्ता व व्यवस्था है जो सभी प्राणियों के कर्मों को याद रख सकती है। इसका उत्तर यह है कि जीवात्माओं के अलावा अन्य चेतन सत्ता केवल एक ईश्वर ही है जो सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ व सृष्टिकर्ता आदि है। हम देखते हैं कि मनुष्य ने एक कम्प्यूटर बनाया जिसमें मनुष्य अपने सभी कार्यों को वर्षों तक सुरक्षित रख सकता है। हम विगत अनेक वर्षों से जो लेख लिख रहे हैं वह हमारे कम्प्यूटर की हार्डडिस्क में सुरक्षित हैं। हार्ड डिस्क एक जड़ पदार्थ है। यह जिन पदार्थों से बनाई जाती है उसका रचयिता ईश्वर ही है। अत: चेतन सत्ता ईश्वर की स्मृति का हम अनुमान भी नहीं लगा सकते। **उसके बारे में तो नेति नेति ही कह सकते हैं।** ईश्वर संसार के सभी प्राणियों के कर्मों का साक्षी होता है और किसी के छोटे से छोटे कर्म को कभी नहीं भूलता। यदि वह कभी किंचित भी भूलता होता तो इस कारण से सृष्टि में कमियां ही कमियां होती जबकि ऐसा नहीं है। इसके लिए ऋषियों ने कहा है कि ईश्वर का ज्ञान न्यूनाधिक कभी नहीं होता। यदि हमने कोई अच्छा व बुरा काम किया है तो उसका ईश्वर को ज्ञान न तो न्यून हो सकता है और न किञ्चित अधिक। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने से सभी अनन्त जीवात्माओं के सभी कर्मों का साक्षी होता है। अत: वह अपने विधान जिसका कुछ दिग्दर्शन उसने वेदों व साक्षात्कृतधर्मात्रृषियों ने मनुस्मृति व दर्शन आदि ग्रन्थ में किया है उन्हीं के अनुसार व्यवहार करता है। इसी कारण सृष्टि की रचना किसी भी प्रकार की न्यूनता से पूर्णतया रहित होने के कारण ही ईश्वर के सब काम अपने विधान के अनुसार यथा समय हो रहे हैं जिसमें जीवात्माओं के कर्मों का यथावत् फल दिया जाना भी सम्मिलित है।

एक उपनिषद् में बताया गया है कि जिस प्रकार एक सद्योजात् गाय की सन्तान गायों के बड़े से बड़े समूह में अपनी माता को ढूंढ लेती है, उसी प्रकार मनुष्य के कर्म भी उसके कर्ता जीवात्मा को जन्म जन्मान्तर में भी ढूंढ कर ईश्वर की व्यवस्था से उनके फलों को भोगने पर ही प्रभावहीन वा समाप्त होते हैं। एक प्रसंग में शास्त्रों में यह भी बताया गया है कि संसार में नाना प्रकार की योनियों में जो जीवात्मायें हैं उसका कारण उनके पूर्वजन्मों के कर्म ही हैं। हमारे सामने जो रोगी, दु:खी व कृपण लोग तथा नीच योनि वाले पशु-पक्षी आते हैं, वह यही सन्देश देते हैं कि हमने पिछले वा इस जन्म में अच्छे कर्म नहीं किये, इस कारण उनका यह हाल है। इसलिए हम

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

मनुष्यों को शुभ व अच्छे कर्म ही करने चाहिये नहीं तो हमारी दशा भी उनके अनुरुप ही होगी। इन सब उदाहरणों से यह निश्चित होता है कि मनुष्य को बुरे कर्मों के ईश्वरीय दण्ड से डरना चाहिये और वेद विहित पंच महायज्ञादि शुभ कर्मों का ही अनुष्ठान व आचरण करना चाहिये जिससे वह दु:ख से बच सके। इसीलिए ईश्वर ने सृष्टि के आदि में वेदों का ज्ञान दिया था जिसको धर्म मानकर पालन करने से ही मनुष्य अभ्युदय व नि:श्रेयस् को प्राप्त हो सकता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगेश्वर कृष्ण और ऋषि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की शिक्षाओं व आज्ञाओं का पूरा पूरा पालन किया था जिसका कारण उनकी विद्या और विवेक ज्ञान था।

ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी तथा सर्वशक्तिमान होने से वह प्रत्येक जीवात्मा के प्रत्येक कर्म, चाहे वह सूर्य के प्रकाश में हो या तीव्रतम अन्धकार में, सब कर्मों का साक्षी ईश्वर होता है। ईश्वर सब जीवात्माओं का न्यायाधीश भी है। न्याय उसे कहते हैं कि जो बिना अपराध के दण्ड न देना और अपराध की मात्रा व प्रकृति के अनुरूप यथोक्त निष्पक्षरूप से दण्ड देना। दण्ड न देना व क्षमा करना न्याय नहीं कहलाता। यदि ऐसा हो तो संसार में अन्याय इतने बढ़ जायें कि कोई भी मनुष्य धर्म का पालन ही न करें। इसका कारण है कि अपराधी जीवात्मा ईश्वर से क्षमा मांग कर बच जाया करेंगे। इसलिए ईश्वर से किसी को यह अपेक्षा नहीं रखनी चाहिये कि उसके बुरे कर्म भूला दिये जायेंगे या क्षमा कर दिये जायेंगे और वह दण्ड से बच सकता है। यह कदापि सम्भव नहीं है। संसार में मनुष्य जो दान व पुण्य कर्म करता है उससे हमारे पापों के फल भोगने पर कोई असर नहीं होता। पूर्व व वर्तमान के कर्म पृथक् कर्म हैं और दान व पुण्य कर्म पृथक् हैं। मनुष्य को सबका पृथक्-पृथक् फल भोगना होता है। पाप व पुण्य कर्मों का समायोजन नही होता। आप किसी को भी गुरु व इष्ट बना लें, कर्म फल के भोग में वह सहायता नहीं कर सकता। यदि ऐसा कोई दावा करता है तो वह स्वयं अपने उस कर्म के कारण ईश्वर के दण्ड का भागी होगा। अत: सभी मनुष्यों को अशुभ कर्म करने से बचना चाहिये। अशुभ कर्म क्या हैं, इसके लिए वेद व सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया जाना उचित है। अन्याय करना, किसी का शोषण करना, पात्रों को दान न देना, परोपकार न करना, ईश्वर उपासना व यज्ञ न करना आदि कार्य अशुभ कर्मों में आते हैं जिससे मनुष्य को कालान्तर में दु:ख प्राप्त होता है। अत: ईश्वरोपासना, यज्ञ आदि कर्मों सहित वेदों का स्वाध्याय व योगाभ्यास कर विवेक प्राप्त करना चाहिये जिससे संसार के सभी दु:खों से मुक्त हुआ जा सके। यही वेद और वैदिक दर्शन का मनुष्यों को सन्देश है। **'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं।'** मनुष्य को अपने शुभ और अशुभ कर्मों के फलों को अवश्य ही भोगना होगा। जब कर्मों का परिपाक होगा तो न ईश्वर किसी जीवात्मा वा मनुष्य को छोड़ेगा और न कोई गुरु, सन्त व महात्मा ही काम आयेगा। तब केवल और केवल पूर्व कृत कर्मो के आधार पर ही हमें फल प्राप्त होगा।

१९६ चुक्खूवाला-२,देहरादून-२४८००१

छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नार्थ अमेरिकन जाट चैरिटी के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक १३ नवम्बर 2016 को चौधरी छोटूराम धर्मशाला रोहतक के भवन में अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ कन्या गुरुकुल शिखापुरम् की प्राध्यापिका उर्मिला आर्य के ब्रह्मत्व तथा प्रवेश आर्या के संयोजकत्व में आरम्भ हुआ। स्वामी परमचैतन्य महाराज संस्थापक एवं अध्यक्ष जन सेवा संस्थान (रोहतक) तथा आचार्य डॉ. धनञ्जय (आचार्य, गुरुकुल पौन्धा) का उद्‌बोधन उत्साहवर्धक रहा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री आजाद सिंह लाकड़ा ने अपने वक्तव्य में नार्थ अमेरिकन जाट चैरिटी एवं मानव सेवा प्रतिष्ठान की इस छात्रवृत्ति योजना को अत्युत्तम एवं सराहनीय बताया।

- रामपाल शास्त्री

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

महान् कौन – अकबर या प्रताप...?

❑ राजेश आर्य...

प्रिय पाठकवृन्द! अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी ने ९ नवम्बर १९१३ को 'प्रताप' के प्रथम अंक में लिखा था –प्रताप हमारे देश का प्रताप, हमारी जाति का प्रताप, दृढ़ता और उदारता का प्रताप तू नही है केवल तेरा यश और कीर्ति है। जब तक यह देश है और जबतक संसार में दृढता, उदारता स्वतंत्रता और तपस्या का आदर प्रताप, तू नही है, तब तक हम क्षुद्र प्राणी ही नही, सारा संसार तुझे आदर की दृष्टि से देखेगा। संसार के किसी भी देश मे तू होता तो तेरी पूजा होती और तेरे नाम पर अपने को न्योछावर करते । अमेरिका मे होता तो वाशिंगटन और लिंकन से तेरी पूजा किसी तरह कम न होती इंग्लैण्ड में होता तो विलिंग्टन और नेल्सज को तेरे आगे शिर झुकाना पड़ता। स्कॉटलैण्ड में होता तो वालेस और राबर्ट ब्रूस तेरे साथी होते। फ्रांस मे जॉन ऑफ आर्क और इटली में मेजिनी के समान तूझे माना जाता।

वियतनाम द्वारा अमेरिका की सेना के विरूद्ध चलाए जाने वाले संर्घष नायक वियतनाम के राष्ट्रपति होची मिन्ह के प्रेरणास्त्रोत थे महाराणा प्रताप। उनकी समाधी पर लिखा गया था–महाराणा प्रताप का शिष्य। वियतनाम के तत्कालीन मंत्री अपनी भारत यात्रा के दौरान स्वयं आग्रह पूर्वक उदयपुर में महाराणा प्रताप की समाधी पर गये और बडी श्रद्धा से वहाँ की कुछ मिट्टी उठाकर अपने थेले मे डाल लिया पत्रकारो द्वारा इसका कारण पूछे जाने पर उन्होने कहा–'यह मिट्टी अपने देश ले जाऊँगा ताकि वहाँ भी महाराणा जैसे वीर पैदा हो।'(प्रसारित समाचार के आधार पर)

जबकि अपने देश मे उस अकबर को महान लिखा–पढा जाता है, जिसके पूर्वजों ने भारत के देश और धर्म की स्वतंत्रता का अपहरण किया और जिसके विरूद्ध महाराणा प्रताप ने स्वतंत्रता का युद्ध लड़ा। इतिहासकार मुस्लिम समाज की नारजगी का ध्यान करके सत्य लिखने से कतराते थे। धर्म निरपेक्षता की आड़ में हिन्दूओ को उदारता का पाठ पढाकर मूर्ख बनाया जा रहा है। जबकि सत्य यही है कि भारत में रहने वाले सभी भरतीयों के लिए गजनवी, गौरी, तैमूर, बाबर, अकबर आदि विदेशी आक्रमणकारी लुटेरे थे। क्योकि भारतीय मुस्लिमों के पूर्वज भी हिन्दू थे। विदेशी हमलावरो से इनका कोई सम्बन्ध जोडकर ये अपनी देशभक्ति को संदेह के दायरे में न लाएँ। इतिहासकारों को भी राष्ट्रहित को प्राथमिकता देकर लिखना चाहिए, सम्प्रदाय विशेष को खुश कर अलगाववादी मानसिकता को बढ़ावा न दें।

'मध्यकालीन भारत' पुस्तक के लेखक प्रो. सतीशचन्द्र ने अपनी पुस्तक में सभी आक्रमणकारियो को महान व उदार सिद्ध करने का कुप्रयास किया है। अकबर की महानता के विषय में तो विस्तार से लिखा और महाराणा प्रताप के विषय में लिखा कि विस्तार से बताने की आवश्यकता नही है। क्यों? क्या इसलिए कि उसके छोटे से प्रदेश का स्वामी, अस्त्र शस्त्र व सेना कम होने के कारण अपने आत्मिक बल व स्वभिमान की ताकत से भारत के सबसे बडे निरंकुश व मतान्ध सम्राट से जीवन भर स्वतंत्रता का युद्ध लडा; व उसके अगम्य साहस व युद्ध– प्रणाली से प्रेरणा लेकर छत्रपति शिवाजी जैसे योद्धाओं ने मुगल सम्राज्य कि नींव खोद दी। प्रत्येक स्वतंत्रता संग्राम मे उसका आदर्श प्रेरक बना हुआ था। आज भी प्रत्येक देश भक्त उसके पावन चरित को याद करके गौरवान्वित होता है व उसे हिन्दुस्तान का सूरज मानता है।

यदि हीन भावना से ग्रस्त व स्वार्थ मे अन्धे हुए मान सिंह (वास्तव मे मान हीन) जैसे लोग अकबर के शिकारी कुत्तों की भुमिका न निभाकर तटस्थ भी बने

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

रहते। तो भी प्रणवीर प्रताप न केवल अपने चित्तौड़ को वापस ले लेता, अपितु अकबर के गुलाम बने राजपूतो की भी स्वतंत्रता बचा लेता और यदि वे राजपूत राणा प्रताप के साहस का चौथाई साहस भी दिखाकर राणा का साथ देते तो विदेशी आक्रमण कारी मुगल वंश भारत को लगभग २००० वर्ष और गुलाम नही रख पाता क्योंकि अकबर को तो उसके राजदरबारियो के विद्रोह ही नष्ट कर देते। ये तो मानसिंह जैसे राजपूत थे, जो अपने ही देशवासियों के खून से हाथ रंगकर उसके साम्रज्य की ढाल बने हुए थे। आज भी मानसिह के वंशज साहित्य (इतिहास) के माध्यम से राणा प्रताप पर आक्रमण कर अकबर की महानता (?) को बचाने का कुकृत्य कर रहे है। स्वयं को हिन्दू कि अपेक्षा ईसाई व मुसलमान मानने वाले पंडित नामधारी जवाहरलाल नेहरू ने भारत की खोज पुस्तक में हिन्दूओं के शिरों को काटकर उनकी मिनार बनाने वाले क्रूर बाबर को आकर्षक व्यक्तित्व वाला, नई जागृति वाला शहजादा, बहादुर, साहसी, कला और साहित्य का शौकीन तथा उसके पौत्र अकबर को उससे भी अधिक आकर्षक, बहादुर, दुस्साहसी, योग्य सेनानायक, विनम्र, दयालु, आदर्शवादी और स्वप्नदर्शी लिखा है। जबकि महाराणा सांगा का नाम भी नही लिखा। राणा प्रताप को अभिमानी आत्मा वाला लिखा है। कुछ इतिहासकार राणा प्रताप को अकबर के राष्ट्रीय एकता के प्रयास में बाधा डालने वाला संकुचित, हठी, घमण्ड़ी व अपनी हठ के कारण मेवाड़ का नाश करने वाला तक लिख रहे है।

यह कैसी विडम्बना है कि जो राष्ट्रीयता अकबर के काल में पैदा ही नही हुई थी, उससे अकबर को अलंकृत किया जा रहा है। अकबर की राष्ट्रीयता और धर्मनिपेक्षता का ढ़ोल पीटने वाले लोग यह न भूले कि उसकी स्वार्थ पूर्ण तथाकथित धर्मनिरपेक्षता उसके साथ ही मर गई थी। जहाँगीर ने उसे अर्ध मन से अपनाया, शाहजहाँ ने बिल्कुल छोड़ दिया और औंरगजेब ने तो उसकी नीति की नीव तक को ढ़हा दिया। जिसके फल स्वरूप बहुत से उन हिन्दू राज्यों को जो अकबर के साथ हो गये थे औरंगजेब के काल में प्रताप की तरह मुगल विरोधी नीति अपनानी पड़ी।

चाहे कुछ भी हो राणा प्रताप के लिए अकबर विदेशी अत्याचारी और हमलावर था, जिसने उनके चित्तौड किले पर कब्जा कर बेरहमी से ३०००० लोगों का कत्ल करवाया था। जिसके कारण चित्तौड़ का तीसरा साका हुआ, जिसमें ३०० महिलाएँ अनेक छोटे-छोटे बच्चों के साथ धधकती चिताओं में कूदने का मजबूर हुई थीं। इससे पूर्व भी अकबर का दादा बाबर व पिता हुमायुँ ने आक्रमणकारी के रूप में ही भारत में प्रवेश कर तबाही मचाई थी। उनसे भी पूर्व इन्ही के पूर्वज तैमूर लंग ने १३९८ ई. में इस देश में लूट, आगजनी और कत्लेआम की जो विनाशलीला की थी, उसे इतिहास भूलकर भी भूल नहीं सकता। बाबर, अकबर आदि सभी मुगल अपने को बड़ी शान से तैमूर का वंशज बताते थे फिर भी ये किसी देश भक्त की नजर में महान थे? तो देश भक्ती की परिभाषा बदलनी पड़ेगी।

यदि गोहत्या बन्द करने से ही अकबर महान बन गया, फिर तो भारत के सभी हिन्दू राजा महान थे, क्योंकि किसी भी हिन्दू राज्य में गोहत्या नही होती थी। यदि जजिया हटाने से अकबर महान है, तो सभी हिन्दू राजा महान थे, क्योंकि उन्होने कभी किसी मुस्लिम प्रजा से कर नहीं लिया। हाँ, यह तो हो सकता है कि हरम में ५००० औरतें रखने के कारण अकबर 'महान्' हो गया हो, पर हिन्दूओं की कन्याओं से विवाह करने के कारण अकबर महान् नहीं है, क्योंकि कुरान के अनुसार उनके लिए हिन्दू औरतें हलाल है। ऐसे विवाह तो फिरोजशाह और सिकन्दर लोदी के पिता बहलोल लोदी ने भी किये थे, क्या वे भी धर्म निरपेक्ष कहलाएगें?

मानसिंह की बुआ हीरकंकर अकबर से विवाह के बाद मरियम उज्जमानी बन गई थी। उससे उत्पन्न हुए सलीम (जहाँगीर) के साथ मानसिंह ने अपनी बहिन मानबाई

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

का विवाह किया। नीचता की हद जब तो तब हो गई, मानहीन को अपने स्वर्गीय बेटे जगतसिंह की पुत्री का विवाह करना पडा। जबकि डॉ. आर्शीवादी लाल के अनुसार उसके हरम में ८०० औरतें थी। इन हिन्दू औरतों से उत्पन्न हुए जहाँगीर व शाहजहां ने मुस्लिम लडकी से विवाह करने वाले हिन्दू को प्राण दण्ड देने की घोषणा कर किस धर्म निरपेक्षता को पालन किया था? गुरू अर्जुनदेव को मरवाकर जहाँगीर ने किस धर्म निरपेक्षता को स्थापित किया था?

गोडवाना की विधवा वीरागंना रानी दुर्गा वती पर बिना कारण आक्रमण (१५६४ ई.) मे भी अकबर की नियत में खोट दिखाई देता है, क्योंकि रानी के मरने (वीरगति पाने पर) सेनापति अशफाक खाँ ने लूट के साथ रानी कि बहिन कमला वती और रानी की पुत्रवधू को भी अकबर के पास आगरा (हरम में) भेजा था, मालवा विजय के बाद (१५६१ ई.) भी इसी तरह लूट का माल (जिसमे धन दौलत के अतिरिक्त बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं।) सेनापति आदम खाँ ने अकबर के पास भेजा था, पर बाजबहादूर कि प्रेयसी रूप मति ने आधम खाँ या अकबर के हरम में जाने से साफ मना कर दिया और विष खाकर अपने सतीत्व की रक्षा की थी।

अपने संरक्षक बैरम खाँ की विधवा स्त्री सलीमा बेगम (अकबर की सगी बुआ गुलरूख बेगम की बेटी) के साथ भी अकबर ने विवाह किया था। कुछ इतिहास लेखकों की दृष्टी में बैरम खाँ की हत्या का उद्देश्य अकबर द्वारा सलीमा बेगम को पाना ही था, क्योंकि पहले तो अकबर ने बैरम खाँ को हज

यात्रा पर भेज दिया फिर उसे जल्दी भारत से निकलने के लिए सेना (मुल्ला पीर मुहम्मद के नेतृत्व में) भेज दी। बैरम खाँ ने विद्रोह कर दिया। वह हार गया और पकडा गया। पुनः उसे हज के लिए भेज दिया गया। पटना की तरफ जाते हुए मार्ग में मुबारक खाँ अफगान ने बैरम खाँ की हत्या कर दी।अब प्रश्न है कि हत्यारे ने सलीमा बेगम और उसके २ वर्षीय पुत्र रहीम खान को क्यों नही मारा या वह उन्हे अपने साथ क्यों नही ले गया था? और वह अकबर के पास कैसे पहुच गई? अकबर की विधवा के प्रति सहानुभूति थी, तो उसका तो उसका विवाह किसी ओर के साथ भी करवा सकता था, उसे अपने हरम (या महल) में क्यों रखा? और हत्यारे को अकबर ने दण्ड क्यों दिया?

पाठक यह न भूले कि अकबर ने नकरो (मानसिंह, भगवान दास टोडरमल आदि) के माध्यम से चार बार राणा प्रताप के पास सन्धि प्रस्ताव भेजा था, पर स्वाभिमानी राणा ने उसे ठुकरा दिया था, क्योंकि उस सुख-सुविधा के बदले राणा को अपनी स्वतंत्रता पर स्वाभिमान की तो बली चढानी ही थी, साथ मे अपनी या अपने परिवार की किसी कन्या के सतीत्व की भी बलि अकबर के हरम में चढ़ानी पडती और फिर नकटों के साथ मिलकर अकबर के शिकारी कुत्तों की भूमिका निभाते हुए अपने देश वासियों की हत्या भी करनी पडती। क्योंकि इससे पूर्व व बाद में स्वाधीनता खोने वाले राजाओं ने यही तो किया। आमेर के भारमल, जैसलमेर के हरराय व डूँगरपुर के आसकरण ने अपनी बेटी अकबर के हरम में भेजी थी। आश्चर्य है अकबर से ऐसे अपमानजनक सम्बन्ध जोडने वाले मजबूर लोगो को 'भारत की खोज' के लेखक ने स्वाभिमानी लिखा है।

बीकानेर के कल्याणमल को अपने भाई काहन की बेटी अकबर के हरम में भेजनी पड़ी क्योंकि उसकी अपनी बेटी विवाह योग्य नहीं थी। काँगडा उर्फ नगरकोट के शासक विधिचंद ने अकबर के हरम के लिए डोला भेजने से मना किया, तो अकबर महान (?) के सैनिको ने ज्वालामुखी देवी के मंदिर में २०० काली गाय काटकर उनके खून से मंदिर के द्वारों व दीवारों को अपवित्र कर दिया था। जोधपुर का मोटा राजा उदयसिंह लगभग १६ वर्ष अकबर कि सेवा में था, पर १८८७ ई. में जब उसने अपनी बेटी मानवती (जोधाबाई) का विवाह जहाँगीर के साथ

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

किया, तभी उसे एक हजार का मनसब दिया गया था। एक तरफ तो ये पिता पुत्र अपने हरमो को औरतों से भरने में जुटे थे, दूसरी तरफ अपनी बेटियो को जीवन भर अविवाहित रख रहे थे। अकबर की बेटी आरामबारो, जहाँगीर की बेटी सुल्तुनिशा (मानसिंह की भानजी) शाहजहाँ अपनी ही बेटी जहाँआरा जीवन भर अविवाहित रह कर मरी थी, रोशनआरा को लगभग ४० वर्ष की अवस्था में औरंजेब ने विवाह की अनुमति दी थी। सोचिए कि अपनी बेटियो को यू तडपाने वाले महान थे?

अकबर की तथाकथित धर्म निरपेक्षता व उदारता का गुनगान करते समय यह नही भूलना चाहिए कि हल्दी घाटी की लडाई (१५७६ई.) में उसके सैनिको ने दोनो ओर के (प्रताप व मानसिंह के) राजपूतों को समान भाव से मारा था। उस युद्ध मे पकडे गये राणा प्रताप के हाथी 'राम प्रसाद' को भी अकबर ने 'पीर प्रसाद' बना दिया था। हिन्दूओं कि प्रसिद्ध तीर्थ प्रयाग राज का भी इस्लामी करण कर १५८८ ई. में इलाहाबाद बना दिया गया था। इसी से तो संदेह पैदा होता है कि फतेहपुर सीकरी का निर्माता कोई ओर ही था। अकबर ने उसका भी इस्लामी करण किया होगा। अपनी राज्य लिप्सा में इस महान सम्राट ने जीवन भर रक्त स्नान किया।

पाठक वृन्द इतिहासकार कुछ भी कहे पर आप निर्णय कीजिए कि महान कौन था-खोया राज्य जीतने अपने संरक्षक बैरम खाँ को मार्ग से हटाकर व उसकी हत्या करवाकर उसकी पत्नी को अपना बनाने वाला अकबर या उसी बैरम खाँ के पुत्र रहीम खाँ की युद्ध में बन्दी बनाई गई पत्नी को सम्मान सहित वापस भेजने वाला प्रताप? अपनी शक्ति के घमण्ड में दूसरों के राज्य व स्त्रियों का अपहरण करने वाला अकबर या अपनी स्वतंत्रता, धर्म व बहु-बेटियों की रक्षा के लिए आक्रमणकारी से युद्ध करने वाला प्रताप? अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करने वालों के सिर कटवाकर मीनारे बनवाने वालो का वंशज अकबर या मालवा व गुजरात के चिर शत्रुओ को भी शरण देने व बन्दी बनाकर भी उनसे अतिथियों वाला व्यवहार कर छोडने की उदारता दिखाने वालो का वंशज महाराणा प्रताप?

कुछ इतिहासकार भले ही हल्दी घाटी में महाराणा की हार का वर्णन करते है, पर यह सत्य है कि उस समर में दिखाई प्रताप की वीरता ने उसे अमर बना दिया और अकबर की मुगल सेना का अजेय होने का भ्रम तोड़ दिया। जीतने के बाद भी मुगलसेना में राणा का पीछा करने की हिम्मत नही हुई। पमास तक गोगूंदा में रहकर भी मानसिंह न तो राणा को पकड सका और न झुका सका। इस जीत (?) से नाराज होकर अकबर ने बुलाया और जब वह अजमेर पहुँचा तो उसे कई दिन तक दरबार में आने की अनुमति नहीं दी गई। यही नहीं इसके बाद मेवाड़ पर कई आक्रमण हुए, लेकिन मानसिंह को कभी सेनापति नहीं बनाया और जब वह शाहबाज खान के अधीन आगे चलकर मेवाड़ पर चढ़ाई करने आया, तब सेनापति ने उसे रास्ते से ही लौटा दिया।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हल्दी घाटी में महाराणा के संघर्ष का प्रारम्भ था, अन्त नहीं। विद्यालय पाठ्यक्रमों में प्राय: महाराणा की हार लिख कर चुप हो जाते है, जबकि यह संघर्ष लगभग ९ साल तक लगातार चलता रहा। अकबर मानसिंह की असफलता से गोगूंदा पहुँचा था। बाद में विशाल सेना भेजी गई। इसके बाद तीन बार शाहबाज खान के नेतृत्व में हमले हुए। रहीम खान और जगन्नाथ के नेतृत्व में मारने, पकडने या झुकाने के प्रयास किये गये, पर राणा ने गुरिल्ला युद्ध प्रणाली अपनाकर मुगल सेना को खूब छकाया। १८८५ ई. तक चले इस कडे संघर्ष में अकबर के हाथों में कुछ भी नहीं आया। राणा प्रताप ने उसके किये को एक वर्ष मे ही उलट दिया। केवल चितौड, माण्डलगढ़ और उनको अजमेर से जोड़ने वाला मार्ग ही मुगलों के हाथ में बचा। शेष सारा मेवाड़ पुन: स्वतंत्र हो गया। राणा प्रताप के राज्यारोहण के समय मेवाड का भूगोल इतना ही था। शेष लगभग १२ वर्ष

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

राणा ने मेवाड की स्मृद्धि में लगाए, अकबर शान्त बैठा रहा। राणा की मृत्यु (जनवरी १५९७ ई.) के बाद सितम्बर १५९९ ई. और अक्तूबर १६०३ ई. में अकबर ने जहॉंगीर के नेतृत्व में मानसिंह व जगन्नाथ के साथ विशाल सेना मेवाड़ पर चढ़ाई करने भेजी, पर उसे असफलता ही हाथ लगी। १६०५ ई. ने पुनः जहाँगीर के बेटे खुसरो ने सागर (राणा प्रताप का सौतेला भाई) आदि ६० अधिकारियों सहित मेवाड़ पर चढाई करने की तैयारी की, पर १५ अक्तूबर को अकबर कब्र में चला गया।

नवम्बर १६०५ में जहॉंगीर ने विशाल सेना राणा अमर सिंह के विरूद्ध सेना भेजी । पुनः १६०८ में महावत खॉं के नेतृत्व में सेना भेजी गई। अगले ही वर्ष अब्दुल्ला खान के नेतृत्व में सेना भेजी गई। राणा ने गुरिल्ला युद्ध करके हर बार मुगल सेना को निराश कर दिया, पर मेवाड भी बार-बार के हमलों से तबाह हो चुका था। १६१२ ई. में राजाबासू को पुनः मेवाड़ भेजा गया, पर वापस बुला लिया और अगले वर्ष जहाँगीर ने पूरी मुगल ताकत मेवाड़ को नष्ट करने के लिए झोंक दी। सारे देशद्रोह राजपूत जहाँगीर के शिकारी कुत्ते बनकर मेवाड़ पर झपट पड़े राणा अमर सिंह अपने पूर्वजों के प्रण को याद कर डटा हुआ था, पर चारो तरफ प्रलय देखकर मेवाड़ के सरदारो ने सन्धि का प्रस्ताव रखा, जो विवस होकर राणा को स्वीकार करना पड़ा। १६१५ ई. के आरम्भ में हुई यह सन्धि यद्यपि सम्मान जनक थी, पर राणा अमर सिंह आत्मग्लानी से भर गया और शहजादा खुर्रम के पास जाने से पहले ही उसने राज सत्ता का त्याग कर दिया। इसके बाद अपनी मृत्यु (३० अक्तूबर १६२० ई.) तक उसने एकान्तवास किया।

आश्चर्य है एसे प्रजा-वत्सल योद्धा को कुछ इतिहास लेखक आलसी, निवासी व आरामपरस्त लिखते रहते है, जबकि दूसरों की हत्या करवाकर उनकी स्त्रियों से जबरदस्ती विवाह करने वाले क्रूर राजा को न्याय की जंजीर का बादशाह लिखते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि लार्ड मैकाले के मानसपुत्रों द्वारा धर्मनिरपेक्षता (मुस्लिम तुष्टिकरण) की मदिरा पिलाकर देश को मदहोश किया जा रहा हैं। देश इस मदहोशी को कब त्यागेगा?

-अट्टा, पानीपत (हरयाणा)

शास्त्रीय स्पर्धा में गुरुकुल पौन्धा

दिनाङ्क ४-५ नवम्बर २०१६ को मानव संसाधन विकास मन्त्रालय की ओर से प्रायोजित श्रीभगवानदास संस्कृत महाविद्यालय में शास्त्रीय स्पर्धा का आयोजन किया गया। इस प्रतिस्पर्धा में गुरुकुल पौन्धा के ... छात्रों ने प्रतिभाग किया। इस शास्त्रीय स्पर्धा के व्याकरणशास्त्रार्थ विचार में ब्र. शिवकुमार ने प्रथम, जैनबौद्धभाषण में ब्र. शिवदेव आर्य ने प्रथम, अमरकोश कण्ठपाठ में ब्र. हरिशंकर आर्य ने प्रथम, काव्यकण्ठपाठ में ब्र. कैलाश आर्य ने प्रथम तथा अंकित आर्य ने द्वितीय, अक्षरश्लोकी में ब्र. सत्यप्रकाश आर्य ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके साथ ही अष्टाध्यायी कण्ठपाठ प्रतिस्पर्धा में ब्र. भानूप्रताप आर्य ने द्वितीय स्थान, धातुरूपकण्ठपाठ में ब्र. भारत कुमार ने द्वितीय, व्याकरणशलाका में ब्र. ईश्वर आर्य ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतिस्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त ब्रह्मचारियों का चयन अगरतला (त्रिपुरा) में दिनांक २८-३१ दिसम्बर में होने वाली प्रतिस्पर्धा में प्रतिभाग करेंगे।

इस प्रतिस्पर्धा में सभी विजेता ब्रह्मचारियों को संस्था संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी व आचार्य डॉ. धनञ्जय, आचार्य चन्द्रभूषण एवं आचार्य यज्ञवीर जी आदि ने आशीर्वाद प्रदान किया एवं अग्रिम प्रतिस्पर्धा के लिए शुभकामनाएँ दी।

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

कृषिविवेचना

❑ ब्र. रवि आर्य...

संसार में किसका समय है एक-सा रहता सदा,
है निशि दिवा सी घूमती सर्वत्र विपदा सम्पदा।
जो आज एक अनाथ है, नरनाथ कल होता वही,
जो आज उत्सव मग्न है कल शोक से रोता वही।।

इस पद्य में जो कहा गया है, उसको आज भारत भूमि सार्थक कर रही है, क्योंकि कहा भी गया है–

जो हो रहा उन्नत अभी, रहा होगा अवनत कभी।
जो हो रहा अवनत अभी, वो रहा होगा उन्नत कभी।।

जो देश प्राचीन काल में इतनी उन्नत दशा को प्राप्त था आज वह अवनत दशा को प्राप्त हो रहा है। जिस देश में मनुष्यों के पास धन ऐश्वर्य की कोई कमी नहीं थी। आज उन्हीं वस्तुओं के लिए रोज हत्याएँ हो रही है। हमारा देश प्राचीन काल में कृषि, पशु-पालन, शिल्प-कला एवं वेदविद्या जैसी कलाओं के लिए विश्व विख्यात था किन्तु आज उसी चीज की कमी खल रही है। जहाँ यह देश प्राचीन काल में कृषिप्रधान देश हुआ करता था। वैसी अवस्था अब नहीं है इस देश की वर्तमान अवस्था के विषय में हमारे हिन्दी कवि द्वारा कहा गया है–

अब पूर्व की सी अन्न की होती नहीं उत्पत्ति है,
पर क्या इसी से अब हमारी घट रही सम्पत्ति है।
यदि अन्य देशों को यहाँ से अन्न जाना बन्द हो,
तो देश फिर सम्पन्न हो, क्रन्दन रूके, आनन्द हो।।

प्राचीन काल मे हमारे कृषि करने वाले कृषक को राजा भी सम्मान दिया करते थे। कृषको के बिना हमारा जीवन शेष नहीं रह पायेगा। इसी विषय में प्रमाण देता हुआ वेद भी कहता है कि **'अक्षैर्मा दिव्यः कृषिमित्कृषीष्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः। तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः।।'** (ऋग्वेद-१०/३४/१३) अर्थात् हे द्यूतव्यसनी! जुए के पासों से मत खेल, कृषि को काट अर्थात् खेती करके अन्न को उपजा, खेती से प्राप्त अन्न धन भोग में आनन्द कर तथा स्वयं को धन्य मानता हुआ प्रसन्न रह, क्योंकि उस कार्य में गायें सुरक्षित हैं तथा उसमें पत्नी सुरक्षित हैं वे प्रसन्न व अनुकूल रहेगी।

क्योकि मनुष्य को जब जन्म मिला तो उसके साथ उसकी भूख को भी जन्म मिला और उस भूख को मिटाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। क्योंकि नीतिकारों ने कहा है–**'प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः'** प्रयत्न करों प्रयत्न करों। क्योंकि **'बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित'** भूखे को कुछ भी अच्छा नही लगता है। इसलिए वेद मे कहा गया है– **'इन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि'** अर्थात् खेती को उत्तम अन्न वाली बनाओ जिससे खेती भी उन्नत हो और अन्न भी। क्योंकि कहा गया है– **'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन'** इसलिए हम उन्नत अन्न को खायेंगे तो हम भी उन्नत दशा को प्राप्त होंगे, क्योंकि शुद्ध अन्न का भक्ष करेंगे तो शुद्ध तन होगा और रोग भी पास नहीं आएगा।कृषि और अन्न पर सभी मानवों का जीवन है। इसीलिए कृषि विद्याविद् की शरण मे सभी जाते है। इस प्रकार का उल्लेख अथर्ववेद मे प्राप्त होता हैं– **'ते कृषिं च सस्यं च मनुष्या उप जीवन्ति। कृष्टराधि रूपजीवनीयो भवति य एवं वेदम्।'** अथर्ववेद में तो राजा का मुख्य कर्त्तव्य कृषि को बताया गया है कि वह कृषि कि एवं धन-धान्य की उन्नति करें–**'कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रम्यै त्वा पाषाय वा।'** शतपत ब्राह्मण में पूरे कृषिकार्यों का चार शब्दों में वर्णन किया गया है– **'कृषन्तः वपन्तः लुनन्तः मृणन्तः'** (शतपथ) अर्थात् जुताई करना, बीज बोंना, कटाई करना और मढ़ाई करके स्वच्छ अन्न को प्राप्त करना। अथर्ववेद में कृषि तथा कृषिकार्य में प्रयोग होने वालें साधनो का उल्लेख इस प्रकार दिया गया है– **सीरा युजन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक्। धीरा देवेषु सुम्नया** (ऋक्.-१०/१०१/४) अर्थात् बुद्धिमानी ज्ञानी दैवी सुख प्राप्त करने के उद्योग में हलों को जोतते है और जुओ को अलग करके फैलाते है।

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

इस प्रकार ऋचा मे हल और जुआ इन दोनो चीजों का वर्णन किया गया है। वर्तमान समय में भी कृषि कार्य में हल और जुओं का प्रयोग होता हैं। कृषिकार्य में किस प्रकार के साधनों का प्रयोग तथा कैसे कार्य किया जाए जिस कारण अन्न का उत्पादन अधिक होवें, इसका वर्णन भी वेद में प्राप्त होता है– **युनक्त सीरा वि युगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम्। विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत् सृण्य पक्वमायवन्।।**

अर्थात् विशेष शोभा युक्त किसान हल जोतो, जुओं को फैलाओ, लकीर बनाने के बाद बीज बोऐ और अन्न की उपज भरपूर होवें जिस प्रकार खेती करने के लिए किसान और बैल का महत्व है। इनके महत्व को बताते हुए अथर्ववेद में कहा गया है कि अच्छे फल वाला सुख देने वाला, लकड़ी की मूठ वाला हल की रक्षा करने वाला, अर्थात् अन्न को उत्पन्न करता हुआ। बैल तथा खेती करने वाले कृषक दोनो उत्तम अन्न को दोनो प्रकार से प्राप्त करें। वेदों में अन्न पैदा करने की विधि के साथ–साथ ही अनाज के सुरक्षा के फसल करने के लिए है। धान की खेती के सन्दर्भ में ऋग्वेद में कहा गया है–

युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम्। गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पकमेयात्।।

अर्थात् हल चलाए जोडियो को जोतिये! जमींन तैयार करने पर उसमें बीज बोईये और धान्य करने के लिए है। इसीलिए फली को निश्चय करके पके हुए धान्य के पास ही ले जावे अर्थात् धान पकने के बाद ही काटा जाये, इससे प्रशंसा युक्त भरण पोषण के साथ हम सबको सुख प्राप्त होगा इसी तरह कृषि में प्रायोग होने वाले फावड़े (कुदाल) का वर्णन एवं वायु और सूर्य की उपयोगिता का वर्णन करते हुए कहा है–

शुनं सुफाला तुदन्तु भूमिं शूनं कीनाशा अनु यन्तु वाहान्। शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्त्तमस्मै।।

अर्थात् सुन्दर फाल भूमि को उत्तम प्रकार से खोदे। किसान बैलादि वहानों के पीछे आनन्द से चले अन्न से संतुष्ट करने वाले वायु और सूर्य इस पुरूष के लिए उत्तम फल वाली वनस्पतियों को प्रदान करें जिससे सभी मनुष्य सुखी एवं स्वस्थ होवे। अब रामायणकालीन कृषि विषय के बारे में कहते है। रामायण काल की कृषि के बारे में वाल्मीकि जी कहते है–**कोशलो नाममुदितः स्फीतो जनपदो महान्। निविष्टः सरयूतीरे प्रभूत धनधान्यवान।।** उस काल में यदि सर्वाधिक आय का कोई स्त्रोत था तो वह कृषि ही था। कृषि के कारण ही सामाजिक जीवन में सुख सम्पन्नता का वास था। अर्थशास्त्र में भी कृषि, पशुपालन तथा व्यापार इन तीनों के सम्मिलित रूप को वार्ता कहा गया है–**कृषिपशुपालने वाणिज्या च वार्ता।** (अर्थशास्त्र)

स्मृतियों में भी वार्ता तथा कृषिकर्म का उल्लेख प्राप्त होता है। मार्कण्डेयपुराण में नारायण के पुत्र को कृषि के प्रथम आविष्कारक के रूप में बताया गया है–

ब्रह्मा स्वयंभूगर्भवान् हस्तसिद्धिं च कर्मजाम्।
ततः प्रभृतयौषधयः कृष्टपच्यातु जज्ञिरे।।(मार्क.स्मृ.)

न केवल ब्रह्मणादि वर्णों के लिए अपितु समस्त मनुष्य के लिए कृषिकर्म को आवश्यक कर्म बताया है–'**षट्कर्म निरतो विप्रः कृषिकर्म च कारयेत्**' '**क्षत्रियोऽपि कृषिं त्वा**' '**कृषिकर्म च वाणिज्यं वैश्यवृत्तिरूदाहृता**' '**कुर्यात् प्रयत्नेन सर्वसत्वोप जीविनीम्**' अर्थात् प्रत्येक मनुष्यों को अन्न प्राप्ति के प्रकृष्टोपकरक कृषि को प्रयत्न पूर्वक करना चाहिए। बौधायनस्मृति के अनुसार समर्थ ब्राह्मणों को वेदाध्यन के साथ कृषिकर्म भी करना चाहिए। तथा यदि दोनो कार्यो में समर्थ न हो तो कृषि कर्म का त्याग करना चाहिए–

वेदः कृषिविनाशाय कृषिर्वेदविनाशिनी।
शक्तिमानुभयं कुर्यादशक्तस्तु कृषिं त्यजेत्।।(बौ.स्मृ.)

मानव जीवन में कृषि का होना नितान्त आवश्यक है। सम्पत्ति और मेधा को देने वाली कृषि ही मानव जीवन का आधार है, इसलिए कहा गया है–

कृषिर्धन्वना कृषिर्मेध्या जन्तुनां जीवनं कृषिः।

–शास्त्री द्वितीय वर्ष
गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

ज्वालयतु रे! दीपपंक्तिम्

❑ डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री...✍

दीपकेनैकेन कृपया ज्वालयतु रे दीप-पंक्तितम्,
राष्ट्र-रक्षार्थं हि सततम् सैनिका: न: विगतनिद्रा:,
सज्जिता: सीमा-प्रदेशे सर्वदा सन्नद्धमुद्रा:,
देशप्रेम-रतस्तदर्थं वाचयस्व सदा प्रशस्तिम् ॥
ज्वालयतु रे दीप-पंक्तितम् ॥१ ॥

मूढता-दीनता-जडता प्रतिदिनं वर्धते देशे,
ज्ञानहीनजनास्तु धूर्त्ता: नि:सृता: खलु साधुवेशे,
ज्ञान-ज्योतिष उद्‌मवार्धं नाशयतु रे! तिमिरशक्तिम् ॥
ज्वालयतु रे दीप-पंक्तितम् ॥२ ॥

राजनीतिरियं सखे! ननु वर्त्तते गणिकेव दुष्टा,
नैव विश्वास: सतामिह धारणेयं हृदि निविष्टा,
कण्टकाकीर्णेषु वर्त्मसु प्रकटयसि किं स्वाऽनुरक्तिम् ॥
ज्वालयतु रे दीप-पंक्तितम् ॥३ ॥

शोषिताश्च बुमुक्षिताश्च वस्त्रहीन-जना: अनेके,
पर्यटन्ति विभिन्नपथिषु चेतनावन्त: स्वदेशे,
जडे पाषाणे परं त्वं दर्शयसि किं वृथा भक्तिम् ॥
ज्वालयतु रे दीप-पंक्तितम् ॥४ ॥

भ्रष्टमाचरणं जनेषु वर्धते तदु महारोग:,
जाति-वर्ग-विशेषवाद: वर्त्तते ननु महाशोक:,
रोग-शोकनिवारणार्थं चिन्तयतु काञ्चिदपि युक्तिम् ॥
ज्वालयतु रे दीप-पंक्तितम् ॥५ ॥

लोकतन्त्रमिदं विचित्रं चिन्तयति न हि तान् दरिद्रान्,
राजनेतारस्तु सततं साधयन्ति सदा समृद्धान्,
सत्यनिष्ठाविरहितेभ्य: दापयिष्यति को विमुक्तिम् ॥
ज्वालयतु रे दीप-पंक्तितम् ॥६ ॥

मातरं पितरं गुरुं वा सेवते बहु श्रद्धया क: ?
संस्कृतं वेदोपनिषदं पठति क: श्रद्धाऽभिभूत: ?
उत्तरं प्राप्तुं नियोजयनाम्नि मे प्रथमा-विभक्तिम् ॥
ज्वालयतु रे दीप-पंक्तितम् ॥७ ॥

- रायबरेली (उ.प्र.)

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

सामान्यज्ञान-दर्पणम्

❑ ब्र. अङ्कित आर्य...✍

नोट : यह 'सामान्यज्ञान-शिक्षणम्' नामक पाठ विद्यार्थियों की आगामी परीक्षाओं को ध्यान में रखकर शुरु किया गया है, ये प्रश्न विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं से अवतरित हैं।

प्र.१ 'आर्य समाज' की स्थापना किस वर्ष में की गई?

उ.- १८७५ में।

प्र.२ 'क्षमावाणी' किस धर्म से संबंद्ध त्यौहार है?

उ.- जैन धर्म से।

प्र.३ शून्य में स्वतन्त्र रूप से गिरने वाली वस्तुओं का त्वरण क्या होता है?

उ.- समान।

प्र.४ किस अनुच्छेद में लोक नियोजन के विषय में अवसर की समता प्रदान की गई है?

उ.- अनुच्छेद - १४।

प्र.५ किस विधि द्वारा मिश्रण में उपस्थित घटकों को पृथक्करण किया जाता है?

उ.- क्रिस्टलन विधि द्वारा।

प्र.६ 'आर्य समाज' की स्थापना किसने की?

उ.- स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने।

प्र.७ 'नवरोज' किन लोगों का नव वर्ष दिवस होता है?

उ.- पारसियों का।

प्र.८ सौरमण्डल का सबसे छोटा उपग्रह कौन-सा है?

उ.- डीमोस।

प्र.९ तृतीय पंचवर्षीय योजना का काल क्या था?

उ.- १९६१ से १९६६ ई. तक।

प्र.१० किसने कहा कि 'विदेशी राज चाहे कितना अच्छा क्यों न हो, स्वदेशी राज की तुलना में कभी अच्छा नहीं हो सकता?

उ.- स्वामी दयानन्द सरस्वती।

प्र.११ 'उगादी उत्सव' किस राज्य में मनाया जाता है?

उ.- कर्नाटक में।

प्र.१२ अनुच्छेद १७ किस विषय से सम्बन्धित है?

उ.- अस्पृश्यता का अन्त।

प्र.१३ एक क्रि.ग्रा भार के बराबर कितना न्यूटन होता है?

उ.- ९.८ न्यूटन होता है।

प्र.१४ 'मुक्तेश्वर मन्दिर' कहाँ स्थित है?

उ.- भुवनेश्वर में।

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm

संस्कृत-शिक्षणम्

❑ ब्र. त्रिजकिशोरार्यः...

अयि सुधियः पाठकाः! संस्कृतस्य शिक्षणं न कठिनम्। संस्कृतं तु अतीव सरलं मधुरं च वर्त्तते। आगच्छत वयं प्रयोगं कृत्वा पश्यामः। एतस्मिन् विभागे व्यावहारिकज्ञानाय सरलानि कानिचन वाक्यानि सरला नियमाश्च प्रदीयन्ते। अत्र ध्यानेन पठित्वा भवन्तः अपि संस्कृतेन व्यवहारं कर्तुमर्हन्ति।

नियमः –

अस्माभिः अधुना पर्यन्तं कारकप्रकरणं समासप्रकरणञ्च अधीतम्। संस्कृतवाङ्मये संस्कृतवाक्येषु सन्धीनाम् अतिप्रयोगः दृश्यते। अतः संस्कृतवाक्यानां सुललितमनोहररचनायाः कृते वयमधुना सन्धिविषयमधीमहे। तर्हिः सर्वप्रथमं जानीमहे यत् को नाम सन्धिरिति? परस्परं वर्णानामत्यधिकसन्निकर्षः सन्धिरित्युच्यते। सन्धिः त्रिधा भवति-स्वरः व्यञ्जनः विसर्गश्च (अच्,हल्,विसर्गश्च)। अधुना वयं जशत्वसन्धिं जानीमहे-

व्यञ्जन-सन्धिः (जश्त्वसन्धिः)

झलां जशोऽन्ते (अष्टा.- ८/२/३९)

झलाम् अर्थात् झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह् इत्येतेषां स्थाने जशः अर्थात् ज्, ब्, ग्, ड्, द् इत्येते आदेशाः पदस्यान्ते वर्तमानानां भवन्ति।

यथा-

जगत्+ईशः=जगदीशः

वाक्+अत्र=वागत्र

दिक्+अग्नि=दिगग्नि

अग्निचित्+अत्र=अग्निचिदत्र

अभ्यासार्थः-

त्रिष्टुप्+अत्र= ?

ककुभ्+ईशः= ?

सम्यक्+अधीते= ?

दिक्+अम्बरः= ?

शब्दार्थः (शरीराङ्गानां नामानि) –

आर्यभाषायाम्		**संस्कृतभाषायाम्**	**आर्यभाषायाम्**		**संस्कृतभाषायाम्**
दाँत	=	दन्तः	नाक	=	नासिका
होंठ	=	ओष्ठः	गर्दन	=	ग्रीवा
नीचे का होठ	=	अधरः	जीभ	=	जिह्वा
कन्धा	=	स्कन्धः	जाँघ	=	जंघा
गला	=	कण्ठः	छाती	=	उरस्थलम्
बाल	=	केशः	पेट	=	उदरम्
पैर	=	पादः	घुटना	=	जानु

This document is created by GIRDAC PDF Creator Pro trial version
GIRDAC PDF Creator Pro full version does not add this green footer
Full version can be ordered from http://www.girdac.com/Products/Buy.htm